नौका विहार

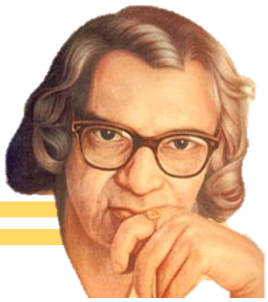

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

एक पद्यांश से बनने वाले अनेक प्रश्नो का हल परीक्षा को दृष्टि में रखकर बहुत महत्वपूर्ण पद्यांश ही रखे गए हैं , परीक्षार्थी इन्हें तैयार अवश्य कर लें।

www.gyansindhuclasses.com

1. शान्त , स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्ज्वल ! अपलक अनन्त नीरव भूतल !
सैकत शय्या पर दुग्ध धवल , तन्वंगी गंगा , ग्रीष्म विरल ,
लेटी है श्रान्त , क्लान्त , निश्चल ! तापस - बाला गंगा निर्मल ,
शशिमुख से दीपित मृदु करतल , लहरें उर पर कोमल कुन्तल !
गोरे अंगों पर सिहर - सिहर , लहराता तार - तरल सुन्दर
चंचल अंचल - सा नीलाम्बर ! साड़ी की सिकुड़न - सी जिस पर ,
शशि की रेशमी विभा से भर सिमटी हैं वर्तुल , मृदुल लहर !

- **भाषा** - शुद्ध संस्कृतनिष्ठ , खड़ीबोली ।
- **अलंकार** - मानवीकरण , सांगरूपक , उपमा , अनुप्रास , पुनरुक्तिप्रकाश एवं स्वभावोक्ति
- **रस** - श्रृंगार ।
- **शब्दशक्ति** - लक्षणा
- **गुण** - माधुर्य ।
- **छन्द** - स्वच्छन्द ।

1. पद्यांश के पाठ और कवि का नाम लिखिए।

उ०- प्रस्तुत पद्यांश कवि सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित ' नौका - विहार ' शीर्षक कविता से उद्धृत है ।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उ०- पन्त जी कहते हैं कि , तारों - भरे आकाश की चंचल परछाईं गंगा के जल में पड़ती हुई ऐसी प्रतीत होती है , मानो उस गंगारूपी तपस्विनी बाला के गोरे - गोरे अंगों के स्पर्श से बार - बार काँपता , तारों - जड़ा उसका नीला आँचल लहरा रहा हो । उस आकाशरूपी नीले आँचल पर चन्द्रमा की कोमल

www.gyansindhuclasses.com

चाँदनी में प्रकाशित छोटी - छोटी कोमल , टेढ़ी , बलखाती लहरें ऐसी प्रतीत होती हैं , मानो लेटने के कारण उसकी रेशमी साड़ी में सिलवटें पड़ गई हों।

3. प्रस्तुत पद्यांश में किसका चित्रण किया गया है ?

उ०- पन्तजी द्वारा चाँदनी रात में अपनी मित्र - मण्डली के साथ गंगा में किए गए नौका विहार का चित्रण किया गया है।

4. गंगा के जल में झलकता हुआ चन्द्रमा का बिम्ब कैसा प्रतीत हो रहा है ?

www.gyansindhuclasses.com

उ०- गंगा के जल में झलकता हुआ चन्द्रमा का बिम्ब ऐसा प्रतीत हो रहा है , मानो गंगारूपी कोई तपस्विनी अपने चन्द्रमुख को उसी के प्रकाश से प्रकाशित कोमल हथेली पर रखकर लेटी हो और छोटी - छोटी लहरों के रूप में उसके वक्षस्थल पर कोमल केश लहरा रहे हो

5. गंगा के जल में पड़ती हुई तारों - भरी आकाश की परछाईं किस प्रकार की प्रतीत हो रही है ?

उ०- आकाश की परछाईं ऐसी प्रतीत हो रही है , मानो गंगारूपी तपस्विनी बाला के गोरे अंगों के स्पर्श से

बार - बार काँपता

तारों - जड़ा उसका नीला आँचल लहरा रहा हो।

6. तन्वंगी एवं ज्योत्स्ना का अर्थ लिखिए।

उ०- तन्वंगी – दुबले पतले / कमजोर शारीर वाली स्त्री

ज्योत्स्ना – चांदनी

7. कुंतल एवं वर्तुल शब्दों का अर्थ लिखो?

उ०- कुंतल – केश / बाल

वर्तुल - टेढ़ी

8. किसके हृदय पर लहरे कोमल केशराशि की भांति प्रतीत हो रही है?

उ०- गंगा के हृदय पर लहरें कोमल केशराशि कि भांति प्रतीत हो रही हैं।

9. कौन तापस कन्या की भांति प्रतीत हो रही है?

उ०- गंगा तापस कन्या की भांति प्रतीत हो रही है।

2. चाँदनी रात का प्रथम प्रहर , हम चले नाव लेकर सत्वर।

सिकता की सस्मित सीपी पर मोती की ज्योत्स्ना रही विचर

www.gyansindhuclasses.com

लो , पालें चढ़ीं , उठा लंगर ! मृदु मन्द - मन्द , मन्थर - मन्थर ,

लघु तरणि , हंसिनी - सी सुन्दर , तिर रही , खोल पालों के पर !

निश्चल जल के शुचि दर्पण पर बिम्बित हो रजत पुलिन निर्भर

दुहरे ऊँचे लगते क्षण भर ! कालाकाँकर का राजभवन
सोया जल में निश्चिन्त , प्रमन पलकों पर वैभव - स्वप्न सघन

- अलंकार - उपमा , रूपक , उत्प्रेक्षा तथा अनुप्रांस
- रस - शान्त
- शब्दशक्ति - अभिधा ।

www.gyansindhuclasses.com

1. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०- पन्त जी कहते हैं कि लंगर उठते ही छोटी - छोटी नावें अपने पालरूपी पंख खोलकर सुन्दर हंसिनियों के समान चित्ताकर्षक मन्थर गति से धीरे - धीरे गंगा में तैरने लगीं। गंगा का जल शान्त और निश्चल है , जो दर्पण के समान सुशोभित है। उस जलरूपी स्वच्छ दर्पण में चाँदनी में नहाया रेतीला तट प्रतिबिम्बित होकर दुगुने परिमाण में व्यक्त हो रहा है। गंगा - तट पर सोभित कालाकांकर के राजभवन का प्रतिबिम्ब गंगा - जल में झलक रहा है। वह प्रतिबिम्ब ऐसा लगता है , मानो वह राजभवन गंगाजलरूपी शैया पर निश्चिन्त होकर सो रहा है और उसकी झुकी पलकों तथा शान्त मन में मानो वैभवरूप स्वप्न तैर रहे हैं।

2. कवि नौका - विहार हेतु किस समय प्रस्थान करते हैं ?

उ०- कवि चाँदनी रात के प्रथम पहर में गंगा की धारा में नौका विहार के लिए निकला।

3. गंगा के तट के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कवि क्या कहते हैं ?

उ०- कवि पन्त कहते हैं कि गंगा का तट ऐसा मनोरम लग रहा है , मानो मुस्काती ; अर्थात् खुली पड़ी रेतीली सीपी पर चन्द्रमारूपी मोती की चमक / विचरण कर रही हो।

4. रात्रि में गंगा नदी की रेती की शोभा कैसी लग रही है ?

उ०- रात्रि में गंगा नदी की रेती की शोभा खुली पड़ी सीपी जैसी लग रही है।

5. लघु तरणि हंसिनी - सी सुन्दर ' में कौन - सा अलंकार है ?

उ०- ' लघु तरणि हंसिनी - सी सुन्दर ' में उपमा अलंकार है।

6. गंगा के तट पर स्थित राजभवन के सौन्दर्य का कवि ने किस प्रकार वर्णन किया है ?

उ०- गंगा के तट पर स्थित राजभवन के सौन्दर्य का चित्रण करते हुए कवि कहते हैं कि गंगा के तट पर शोभित कालाकाँकर के राजभवन का प्रतिबिम्ब गंगा के जल में झलक रहा है। वह प्रतिबिम्ब ऐसा प्रतीत होता है , मानो वह राजभवन गंगाजलरूपी शैया पर निश्चिन्त होकर सो रहा है और उसकी झुकी पलकों तथा शान्त मन में मानो वैभवशाली स्वप्न तैर रहे हों।

www.gyansindhuclasses.com

3. ज्यों - ज्यों लगती है नाव पार उर में आलोकित शत विचार।
इस धारा - सा ही जग का क्रम , शाश्वत इस जीवन का उद्गम ,

शाश्वत है गति , शाश्वत संगम ! शाश्वत नभ का नीला विकास ,
शाश्वत शशि का यह रजत हास , शाश्वत लघु लहरों का विलास !
हे जग - जीवन के कर्णधार ! चिर जन्म - मरण के आरपार ,
शाश्वत जीवन - नौका - विहार ! मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान ,
जीवन का यह शाश्वत प्रमाण , करता मुझको अमरत्व दान !

- भाषा - खड़ीबोली।
- अलंकार - उपमा एवं रूपक।
- रस - शृंगार।
- शब्दशक्ति - लक्षणा

www.gyansindhuclasses.com

1. रेखांकित अंश की व्याख्या / भावार्थ कीजिए।

उ०- कवि भावनाओं के सागर में डूब गया और सोचने लगा कि हे संसार की जीवनरूपी नौका को चलानेवाले भगवान् ! जन्म के पश्चात् सदैव मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् सदैव जन्म है। इसी प्रकार यह जीवनरूपी नौका का विहार निरन्तर चलता रहता है। भावनाओं में डूबा कवि कह उठता है कि मैं चिन्तनशील होकर भी अपनी सत्ता का ज्ञान भूल गया। जीवन की शाश्वतता का जलधारारूपी यह प्रमाण ही मुझे अमरत्व प्रदान करता है।

2. कवि नौका - विहार के समय संसार के क्रम के बारे में क्या सोचते हैं ?

उ०- कवि नौका - विहार के . समय संसार के क्रम के बारे में यह सोचते हैं कि इस संसार का क्रम भी इसी जलधारा के समान ही है।

3. जीवन की गति और मिलन को किसके समान शाश्वत बताया गया है ?

उ०- जीवन की गति और मिलन को जलधारा के समान शाश्वत बताया गया है

4. किस अदृश्य सत्ता की ओर पन्तजी का संकेत है ?

उ०- ईश्वर की अदृश्य सत्ता की ओर पन्तजी का संकेत है।

5. ' जगजीवन के कर्णधार ' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ०- ' जगजीवन के कर्णधार ' का आशय संसार की जीवनरूपी नौका को चलानेवाले मल्लाह से है।

www.gyansindhuclasses.com

6. नौका - विहार के समय जीवन और मृत्यु के सन्दर्भ में कवि के मन में क्या विचार आता है ?

उ०- नौका - विकार के समय जीवन और मृत्यु के सन्दर्भ में कवि के मन में यह विचार आता है कि जन्म के पश्चात् सदैव मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् सदैव जन्म है। इसी प्रकार यह जीवनरूपी नौका का विहार निरन्तर चलता रहता है।

7. ' जग का क्रम ' कैसा है ?

उ०- जग का क्रम नदी की धारा के जैसा है।

8. इस पद्यांश के अनुसार क्या - क्या तथ्य शाश्वत हैं ?

उ०- इस पद्यांश के अनुसार जीवन का उद्गम , गति , संगम , नभ का नीला विकास , चन्द्रमा का रजत – हास , लघु लहरों का विलास , जीवनरूपी नौका का . विहार आदि तथ्य शाश्वत हैं।

9. रजत हास ' और ' कर्णधार ' का क्या अर्थ है?

www.gyansindhuclasses.com

उ०- रजत हास ' का अर्थ चन्द्रमा की चाँदनी और ' कर्णधार ' का अर्थ -पतवार चलानेवाला अथवा सहारा है।

10.कर्णधार ' तथा ' शाश्वत ' शब्द का अर्थ लिखिए।

उ०- ' कर्णधार ' का अर्थ मल्लाह तथा शाश्वत ' का अर्थ सदैव विद्यमान है।

11.नभ का नीला विकास कैसा है?

उ०- नभ का नीला विकास शाश्वत है।

12.उद्गम तथा कर्णधार शब्दों न का अर्थ लिखो?

उ०- उद्गम – आविर्भाव , कर्णधार – पतवार या नौका चलाने वाला (अर्थात) संसाररूपी नौका चलने वाला ईश्वर)

दो बाहों से दूरस्थ तीर धारा का कृश कोमल शरीर
आलिंगन करने को अधीर !
अति दूर, क्षितिज पर विटप-माल लगती भू-रेखा-सी अराल,
अपलक नभ नील-नयन विशाल;
माँ के उर पर शिशु-सा, समीप, सोया धारा में एक द्वीप,
उर्मिल प्रवाह को कर प्रतीप,
वह कौन विहग? क्या विकल कोक, उड़ता हरने निज विरह शोक?
छाया की कोकी को विलोक !

1. उपयुक्त पद्यांश के पाठ एवं रचयिता का नाम लिखिए।

उ०- उपर्युक्त पद्यांश 'नौका विहार' कविता से उद्धृत है। इस कविता के रचनाकार सुमित्रानंदन पंत जी हैं।

www.gyansindhuclasses.com

2. दूर क्षितिज पर विटप-माल कैसे लग रही है?

उ०- बहुत दूर क्षितिज पर वृक्षों की, वह पंक्ति थी, जो धरती की छटा को अपलक निहारते हुए, आकाश के नीलवर्णी और विशाल नयन की तिरछी भौंह के समान दिखाई दे रही थी।

3. कौन किसका आलिंगन करने को व्याकुल है?

उ०- गंगा के दोनों तट, फैले हुए बाँह की भाँति प्रतीत हो रहे थे जैसे वे गंगा की धारा के क्षीणकाय कोमल नारी के शरीर से आलिंगन बद्ध होने के लिए अधीर हो रहे थे।

4. 'उर्मिल' और 'प्रतीप' शब्दों का अर्थ लिखिए।

उ०- उर्मिल - लहरों से युक्त। प्रतीप - प्रतिकूल या विरुद्ध।

5. रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

www.gyansindhuclasses.com

उ०- वह पक्षी कौन है? क्या वह कोई अपनी चकवी से बिछुड़ा हुआ व्याकुल चकवा तो नहीं है, जो गंगा के जल में पड़े अपने प्रतिबिम्ब को ही चकवी समझ बैठा है।

बापू के प्रति

(1) तुम मांसहीन , तुम रक्तहीन हे अस्थिशेष ! तुम अस्थिहीन ,
तुम शुद्ध बुद्ध . आत्मा केवल , हे चिर पुराण ! हे चिर नवीन !
तुम पूर्ण इकाई जीवन की , जिसमें असार भव - शून्य लीन ,
आधार अमर , होगी जिस पर भावी की संस्कृति समासीन ।
तुम मांस , तुम्हीं हो रक्त – अस्थि निर्मित जिनसे नवयुग का तन ,
तुम धन्य ! तुम्हारा नि : स्व त्याग है विश्व भोग का वर साधन ;
इस भस्म - काम तन की रज से जग पूर्ण - काम नव जगजीवन ,
बीनेगा सत्य - अहिंसा के ताने - बानों से मानवपन ।

- भाषा - संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली ।
- अलंकार - उल्लेख , विरोधाभास , यमक एवं रूपक।
- रस - भक्ति
- शब्दशक्ति - अभिधा एवं लक्षणा

www.gyansindhuclasses.com

- गुण – प्रसाद।

1. पद्यांश के पाठ और कवि का नाम लिखिए।

उ०- प्रस्तुत पद्यांश प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित ' युगान्त ' से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित ' बापू के प्रति ' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

www.gyansindhuclasses.com

उ०- युगपुरुष महात्मा गांधी की स्तुति करते हुए कविवर पन्त कहते हैं कि हे बापू ! तुम शरीर से दुर्बल तथा मांस और रक्त से हीन हो एवं तुम्हारा शरीर हड्डियों का ढाँचामात्र है। उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे शरीर में अस्थियाँ भी शेष नहीं हैं। तुम पवित्र ज्ञान से युक्त आत्मावाले हो। तुममें प्राचीन और नवीन आदर्शों का समन्वय है ; अर्थात् तुम प्राचीन आदर्शों के साथ - साथ नवीन आदर्शों को भी स्वीकार करते हो।

3. गांधीजी के शरीर को देखकर कवि को कैसा प्रतीत होता है?

उ०- गांधीजी के शरीर को देखकर कवि कहते हैं कि हे बापू ! तुम शरीर से दुर्बल और मांस व रक्त से हीन हो और तुम्हारा शरीर हड्डियों का ढाँचामात्र है। उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे शरीर में अस्थियाँ भी शेष नहीं हैं।

4. कवि के अनुसार नवयुग का निर्माण किससे होगा ?

उ०- कवि के अनुसार नवयुग का निर्माण महात्मा गांधी के सद् - आदर्शों से होगा।

5. कवि के अनुसार गांधीजी का नि:स्वार्थ त्याग किसका कारण बनेगा?

उ०- कवि के अनुसार गांधीजी का नि : स्वार्थ त्याग मानव - जाति के कल्याण का कारण बनेगा।

6. कौन हड्डियों का ढांचा मात्र प्रतीत होते हैं ?

उ०- महात्मा गाँधी।

7. गांधी जी को कवि ने चिर पुराण तथा चिर नवीन क्यों कहा है?

उ०- ज्ञानस्वरूप अर्थात आत्मस्वरूप होने के कारण गाँधी जी को चिर पुराण तथा चिर नवीन क्यों कहा है। क्योंकि वे नवीनता और पुरातनता को आत्मसात करने वाले व्यक्ति थे।

8. गाँधी जी के आदर्शों पर किसे भविष्य में खड़ा होना पड़ेगा?

www.gyansindhuclasses.com

उ०- गाँधी जी के आदर्शों पर भविष्य में मानव संस्कृति को खड़ा होना पड़ेगा।

(2) सुख भोग खोजने आते सब, आए तुम करने सत्य - खोज ,
जग की मिट्टी के पुतले जन , तुम आत्मा के , मन के मनोज !

जड़ता , हिंसा , स्पर्धा में भर चेतना, अहिंसा , नम्र ओज ,
पशुता का पंकज बना दिया तुमने मानवता सरोज।।

- अलंकार - रूपक एवं अनुप्रास
- रस - शान्त
- गुण - माधुर्य ।

www.gyansindhuclasses.com

1. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०- पन्तजी कहते हैं कि हे बापू ! प्रायः समस्त प्राणी पृथ्वी पर जन्म लेकर सुख की कामना करते हैं , परन्तु आपने इस पृथ्वी पर सत्य को खोज करने के लिए अवतार लिया। मानव मिट्टी से निर्मित एक पुतला है। वह यहाँ मिट्टी से बनकर आता है तथा अन्त में मिट्टी में ही मिल जाता है। हे बापू आप भी मिट्टी के बने थे , परन्तु आपके उस मिट्टी - निर्मित शरीर में सत्य आत्मा निवास करती थी तथा आप मन को प्रसन्न करनेवाले कमल के समान थे।

2. मानव को मिट्टी का पुतला बताकर कवि ने क्या कहा है ?

उ०- मानव को मिट्टी का पुतला बताकर कवि ने जीवन को क्षणभंगुरता की ओर संकेत किया है। उसके अनुसार मानव मिट्टी से बना एक पुतला है और अन्त में इस मिट्टी में ही मिल जाता है।

3. बापू ने मानवों में किन मानवीय गुणों को जाग्रत किया ?

उ०- बापू ने मानवों की अकर्मण्यता , हिंसा और प्रतिद्वन्द्विता को दूर करके उनमें ज्ञान , अहिंसा और आत्मिक शक्ति जैसे मानवीय गुणों को जाग्रत किया

4. यहाँ कीचड़ में उत्पन्न कमल को किस सन्दर्भ में प्रयुक्त किया गया है ?

उ०- यहाँ कीचड़ में उत्पन कमल को इस सन्दर्भ में प्रयुक्त किया गया है। कि बापू ने मानव - समाज में व्याप्त वर्गभेद , जातिभेद , हिंसा आदि की कीचड़ में उत्पन्न होकर भी स्वयं को सत्य , अहिंसा और त्याग के गुणों से समन्वित करके मानवतारूपी स्वच्छ सरोवर में उत्पन कमल के समान बना दिया।

5. इस संसार में सब लोग क्या खोजने आते हैं? अथवा मानव नश्वर संसार में आकर किसकी खोज करता है।

www.gyansindhuclasses.com

उ०- मानव नश्वर संसार में आकर सुखों एवं भोगों की खोज करता है।

6. स्पर्द्धा और अहिंसा शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिये।

उ०- स्पर्द्धा – प्रतिद्वंद्विता , अहिंसा – रक्तपात रहित।

7. मनुष्य क्या है?

उ०- मानव को मिट्टी से निर्मित एक पुतला है और अंत में मिट्टी में मिल जाता है?

8. सत्य की खोज करने कौन आया?

उ०- कवि के अनुसार महात्मा गाँधी इस धरती पर सत्य की खोज करने के लिए अवतरित हुए।

(3) कारा थी संस्कृति विगत , भित्ति
बहु धर्म - जाति - गति रूप - नाम ,
बन्दी जग - जीवन , भू विभक्त
विज्ञान - मूढ़ जन प्रकृति - काम ,
आये तुम मुक्त पुरुष , कहने
मिथ्या जड़ बन्धन , सत्य राम ,
नानृतं जयति सत्वं मा भैः ,
जय ज्ञान - ज्योति तुमको प्रणाम !

www.gyansindhuclasses.com

- अलंकार - रूपक एवं अनुप्रास।
- रस - शान्त।
- शब्दशक्ति - अभिधा और लक्षणा।
- गुण – प्रसाद।

1. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ०- हमारी संस्कृति पिछले लम्बे समय से वन्दिनी थी अर्थात् यहाँ सबकुछ विदेशियों की इच्छानुसार संचालित था , हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप कुछ भी करने की स्वतन्त्रता न थी। हमारे बीच में धर्म - जाति , ऊँच - नीच , गोरे - काले आदि की अनेक दीवारें खड़ी थीं , जो कि हमारी प्रगति में बाधा डाल रही थीं। इस प्रकार सम्पूर्ण सामान्य जन - जीवन ही कैद में था।

सम्पूर्ण धरती क्षेत्रीयता और भाषावाद आदि के आधार पर बँटी हुई थी। विज्ञान की प्रगति के कारण विवेकहीन मनुष्य प्रकृति को अपनी इच्छानुसार संचालित करने का प्रयत्न कर रहा था। ऐसी विषम परिस्थितियों में हे महात्मा गांधी आप हमारे मध्य जीवनमुक्त योगी के रूप में अवतरित हुए। हमें यह सन्देश देने के लिए ही आप हमारे मध्य अवतरित हुए कि इस संसार के सारे रिश्ते - नाते झूठे और व्यर्थ है।

www.gyansindhuclasses.com

2. विगत संस्कृति की कौन - कौन सी दीवारें थीं ?

उ०- विगत संस्कृति की दीवारें धर्म - जाति , ऊँच - नीच , गोरे - काले आदि के भेदभाव की अनेक दीवारें थीं।

3. 'जड़ बन्धन मिथ्या है और राम सत्य है ' यह उद्घोष करने कौन आया ?

उ०-' जड़ बन्धन मिथ्या है और राम सत्य है ' यह उद्घोष करने महात्मा गांधी आए थे।

4. ' नानृतं जयति सत्यं ' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ०-' नानृतं जयति सत्यं ' का अर्थ है कि झूठ की नहीं , बल्कि सत्य की विजय होती है।

5. हमारी विगत संस्कृति कैसी थी ?

उ०- हमारी विगत संस्कृति कारागार के समान थी।

www.gyansindhuclasses.com

6. सदैव किसकी विजय होती है ?

उ०- सदैव सत्य की विजय होती है।

www.gyansindhuclasses.com